



आस-पास

आस-पास

कभी किसी नई और अच्छी बात को समझने के लिए एकाध कठिन शब्द भी जान लेने में मज़ा आता है। पर्यावरण एक ऐसा ही शब्द है। हमारे बिल्कुल आस-पास और खूब दूर-दूर जो कुछ भी है, उसका बहुत-सा भाग, बहुत-सी चीज़ें, उसकी बहुत-सी बातें इसी एक शब्द में समा जाएँगी। मिट्टी, पानी, हवा, नदी, ताल-तलैया, समुद्र, पहाड़, पेड़-पौधे, जंगल, जंगल में रहने वाले पशु-पक्षी, जंगल से बाहर गाँव में शहरों में रहने वाले हम-यह सब कुछ पर्यावरण जैसे छोटे-से शब्द में आ जाता है।

हम इस बहुत ही बड़े चारों तरफ़ फैले पर्यावरण का एक बिल्कुल छोटा-सा भाग भर हैं। पर छोटा-सा हिस्सा होते हुए भी हमने इस पर्यावरण को बिगाड़ना शुरू कर दिया है। हमारा पर्यावरण बिगाड़ेगा तो हम सब पर भी इसका असर अच्छा नहीं होगा। इसीलिए पर्यावरण की बातों को हमें अपने विद्यालयों में, अपने घर में भी धीरे-धीरे समझना चाहिए।

यह भाग हमारे पर्यावरण को समझने की एक शुरुआत है। इसमें दिए गए पाठ हमारे लिए एक दरवाज़ा खोलते हैं—इस दरवाज़े से बाहर निकलकर हम और कई नई बातें, जानकारियाँ खुद भी सीख सकेंगे।

बाघ आया उस रात कविता में हमारे परिवार की तरह बाघ के परिवार की बात आई है। पर इधर हमारे जंगलों का यह राजा गायब हो चला है। बाघों का और वनों में रहने वाले दूसरे जीवों का शिकार मना है। फिर भी चोरी-छिपे इन बाघों को मारा जा रहा है। इनको बचाने के लिए क्या कोशिश हो रही है, इस बारे में भी हमें सोचना चाहिए। **एशियाई शेर के लिए मीठी गोलियाँ** पाठ हमें बताता है कि शेर भी कभी बीमार पड़ सकता है और तब उसकी देखभाल उसी तरह करनी पड़ती है, जिस तरह बीमार पड़ने पर हम अपनी देखभाल करते हैं।

किसी भी पक्षी को मारने से ज़्यादा बहादुरी तो उसे बचाने में है।
बिशन की दिलेरी पाठ इस बात का उदाहरण है।

पानी रे पानी में जलचक्र की किताबी बात को आगे बढ़ाकर अकाल और बाढ़ की परिस्थिति को समझाया गया है। इससे हमें हर जगह फैल रहे जल-संकट को समझने और उसे सुलझाने का भी रास्ता मिलता है।

छोटी-सी हमारी नदी कविता नदी और उससे जुड़े हमारे जीवन की एक सुंदर झलक दिखाती है। लेकिन आज तो हमारे शहरों का, कारखानों का गंदा पानी छोटी-बड़ी सब नदियों में मिल रहा है और उन्हें बर्बाद कर रहा है। इस कविता के कवि रवींद्रनाथ ठाकुर के पुश्तैनी घर और उनके बचपन की झलक हमें **जोड़ासांको वाला घर** नामक पाठ में मिलती है।

चुनौती हिमालय की पाठ हमें बर्फ़ से ढके ऐसे ऊँचे पहाड़ पर चढ़ाता चला जाता है, जहाँ आठ कदम चलना भी बहुत कठिन हो जाता है। लेकिन यहाँ भी जीवन तो चलता ही है। पेड़ों से हमारा जीवन कई स्तरों पर जुड़ा है। इस गहरे रिश्ते की बात **हम क्या उगाते हैं** कविता में उठाई गई है।

इन पाठों में हमें हाथी, शेर, तीतर, नदी, बर्फ़, पेड़ और न जाने क्या-क्या मिलेगा। लेकिन पर्यावरण का यह दरवाज़ा एक बार खुल जाए तो हम इन बातों से भी आगे बढ़कर गायब हो चुके डायनासौरों तक को खोज सकेंगे। इतने बड़े, लंबे, चौड़े जानवर यदि धरती से गायब हो सकते हैं तो हमें थोड़ा ठहरकर यह भी सोचना पड़ेगा कि पर्यावरण की बेकद्री करने पर क्या हम सब भी बच पाएँगे?